© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

बिहार की प्रसिद्ध पर्यटन स्थली 'कॉवर झील' की समस्याएँ और विकास की संभावनाएँ

डॉ.राजा राम पाल
शिक्षक, राजा जगन्नाथ +2 स्कूल,
देव, औरंगाबाद, बिहार, भारत।

ABSTRACT

पर्यटन का अभिप्राय घूमना या भ्रमण करना होता है। आज अर्थव्यवस्था का तेजी से फैलता हुआ खंड एवं वृद्धि करता एवं महत्वपूर्ण परिघटना है। विश्व में इसके फैलते प्रभाव के कारण पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। यह स्पष्ट है कि हम पर्यटन को रोक नहीं सकते हैं और नहीं प्रदूषण को। इसलिए पारिहितकारी पर्यटन (Eco Tourism) को संकल्पना को हर जगह बढ़ावा दिया जा रहा है। अर्थव्यवस्था इस खंड ने बड़ी संख्या में नौकरियों के अवसर, संस्कृतियों एवं रीतियों के संरक्षण और लोगों को एकत्रित करने का काम किया है। इस कारण सम्पूर्ण विश्व में लोग एक दूसरे के समीप आये है। साथ ही अधस्तल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका देखने को मिल रही है। इस प्रकार इसने विश्व शांति तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया है।

मानव प्राचीन काल से प्राकृतिक छटाएँ जैसे उतुंग चोटियॉ, समुद्री लहरें, बहती नदियॉ, सुंदर जल प्रपात एवं चहकती पक्षियॉ आदि से प्रभावित हुई हैं। इनमें पक्षियों का अवलोकन बड़ी ही मनोहारी एवं मनोरंजन होता है। विश्व के लाखों पर्यटक प्रति वर्ष कॉवर झील देखने आते हैं। कॉवर बेगुसराय में स्थित एक प्रसिद्ध विदेशी पक्षी विहार है, यहॉ बड़ी संख्या में पक्षी विशेषज्ञ प्रर्वासित पक्षियों के मार्ग,पक्षियों से फैलने वाली बीमारियों और उनकें विलुप्तीकरण के कारणों की खोज करने आते हैं। कॉवर झील 6786 हेक्टेयर में फैला हुआ बिहार का एक पक्षी विहार है। यहॉ हजारों प्रकार के पादप एवं जलीय जीवों की प्रजातियॉ पायी जाती है। प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ डॉ0 सलीम अली विदेशी एवं देशी पक्षियों पर शोध हेतु करने आते थे।

शोध का उद्देश्य – इस शोध का मुख्य उद्देश्य लोगों को बिहार की प्रसिद्ध प्राकृतिक छटाओं से अवगत कराना है साथ ही उत्तर बिहार में अवैध पक्षियों के शिकार के प्रति सचेत करना है। स्थानीय लोगों को इस पक्षी बिहार के प्रति जागरूक करना ताकि तेजी से हो रहे अतिक्रमण को रोकना है। साथ ही जिला के प्रशासनिक पदाधिकारीयों को इस झील से संबंधित समस्याओं से रूबरू करना भी है।

शोधविविध तंत्र – प्रस्तुत शोध में मैं प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ऑकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक ऑकड़े क्षेत्र निरीक्षण, प्रश्नावली से प्राप्त किये गये हैं। वहीं द्वितीय ऑकड़े शोध पत्र, पुस्तकें, शोध ग्रंथ एवं सामाचार पत्रों से एकत्र किये गये है। इस शोध में यथा स्थान मानचित्र एवं ग्राफ का भी प्रयोग किया जायगा।

शोध क्षेत्र – प्रस्तुत शोध क्षेत्र बेगूसराय जिला के चेरिया– बरियारपुर और गढ़ ब्लॉक में स्थित है। वास्तव में यह कोसी–गंडक दोआव के बीच मिथिला मैदान में अवस्थित है। इस भाग की समुद्र तल से ऊँचाई 45 मी0 है। इस झील की अवस्थिति 25^0 36′ उत्तरी अक्षांश और 86^0 04′ पूर्वी देशांतर के बीच है। इसका 90% भाग चेरिया–बरियार ब्लॉक में पड़ता है। यह स्थान बेगुसराय से 22 किलोमीटर उत्तर स्थित है। कहा जाता है कि गंडक नदी एवं इसके सहायक नदियों के पूर्ववर्ती मार्ग छोडने के कारण इस झील का निर्माण हुआ है। लेकिन तेजी से इसका विनाश हो रहा है। यहॉ नाना प्रकार के पक्षियॉ आती है उनमें कुछ विदेशी तो कुछ देशी हैं, कोयल, बुलबुल, डर्टर, लाल टर्टल पंडुक और फसनी पक्षियॉ मुख्य हें। गौरेया, मैना, हेरान, अबाबील, पंडुक, कबूतर, तोता वहॉ के स्थानीय पक्षी हैं।

कॉवर झील की समस्याएँ – आज कॉवर झील कई प्रकार की समस्याओं से जूझ रही है, उनमें कुछ मुख्य समस्याएँ निम्नलिखित है–

1. **वनोन्मूलन** – झील के आस–पास बड़े–बड़े पेड़ पौधे थे जिनका बुरी तरह से काटा गया है। इससे पक्षियों के प्रजनन एवं आवास में समस्याएँ आ रही है। पक्षियॉ यहॉ अब रूक नहीं पा रहीं है।
2. **अवैध शिकार** – कॉवर झील के आस–पास के हाटों एवं बाजारों में मिशकीर एवं चिड़ीमार प्रत्येक दिन हजारों में पक्षियों को अवैध ढंग से पकड़कर लाते हैं और बेचते हैं। बाजारों चकवा, डूमर एवं लाल सर पक्षियों की बड़ी मांग है। बरौनी, बेगूसराय और खगड़िया इन अवैध पक्षियों की मंडी है।

3. **सुपोषण** – कॉवर झील धान के खेतों के बीच स्थित है जिस कारण बड़ी मात्रा में खाद एवं कीटनाशक दवाएँ बहकर झील में पहुँचती है इसके कारण झील में अजैविक एवं जैविक पदार्थो की मात्रा बढ़ रही है। इससे कॉवर झील की जैविक दशाएँ बिगड़ रही है।
4. झील की बाहरी सीमा आज भी रेखांकित नहीं है। इस कारण इस झील का बुरी तरह से अतिक्रमण हो रहा है। झील के किनारे की भूमियॉ वहॉ के कृषकों के द्वारा तेजी से अतिक्रमण कर अपने खेत में मिलाया जा रहा है। इस कारण यह झील तेजी से सिकुड़ रहा है।
5. **समाधान एवं** निष्कर्ष – कॉवर झील का संरक्षण अतिआवश्यक है। इसके लिए अवैध शिकार पर रोक लगायी जाय झील के अतिक्रमण पर वहॉ के अंचलाधिकारी सख्त कार्रवाई की जाय, सुपोषण की समस्या को यथाशीघ्र समाधान किया जाये साथ ही कॉवर झील के विकास के लिए कॉवर लेक डेवलेपमेंट अथोरिटी (के0 एल0 डी0 ए0) का गठन किया जाय, झील में पक्षियों के निरीक्षण के अलावा नौका विहार की व्यवस्था हो, कुछ स्थानों पर पक्षी निरीक्षण टावर बनाये जाये।

यदि समय रहते कॉवर झील के संरक्षण के लिए आवश्यक कार्रवाई नहीं की गयी तो यह प्राकृतिक धरोहर सदा के लिए विलुप्त हो जायगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. भाटिया, ए0 के0 (2002) – पर्यटन विकास, सिद्धांत एवं व्यवहारिकताएँ, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ओखा–नई दिल्ली– 20
2. En. wikipedia. Org/wiki/kawwar-Lake- Bird Sanctuary
3. घोष, अशोक (2010) – कॉवर लेक – वर्ड पाराडाइस लास्ट
4. मल्होत्रा, डॉ0 अशोक कुमार (2001) – प्रवासी पक्षी, पब्लिकन डिवीजन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय – नयी दिल्ली
5. सिंह, केदारनाथ (2007) – तीर्थांक, गीता प्रेस, गोरखपुर
6. सिंह, सुशील (2010) – नमी भूमियों का महत्व, ज्योग्राफिकल पर्सपेक्टिव्स, पटना
7. सिंह, आर0 एल0 (1971) – इंडिया– ए रिजनवल ज्योग्राफी नेशनल ज्योग्राफिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, वाराणसी